सिल्विया के नए जूते

जैरी

सिल्विया के नए जूते

Morrow Junior Books New York

एक बार, दक्षिण अमेरिका के एक छोटे शहर में दूर-दराज़ से एक पैकेज, पोस्ट ऑफिस में आया. पैकेज टिया रोजिता ने भेजा था. पैकेज के अंदर पूरे परिवार के लिए उपहार थे.
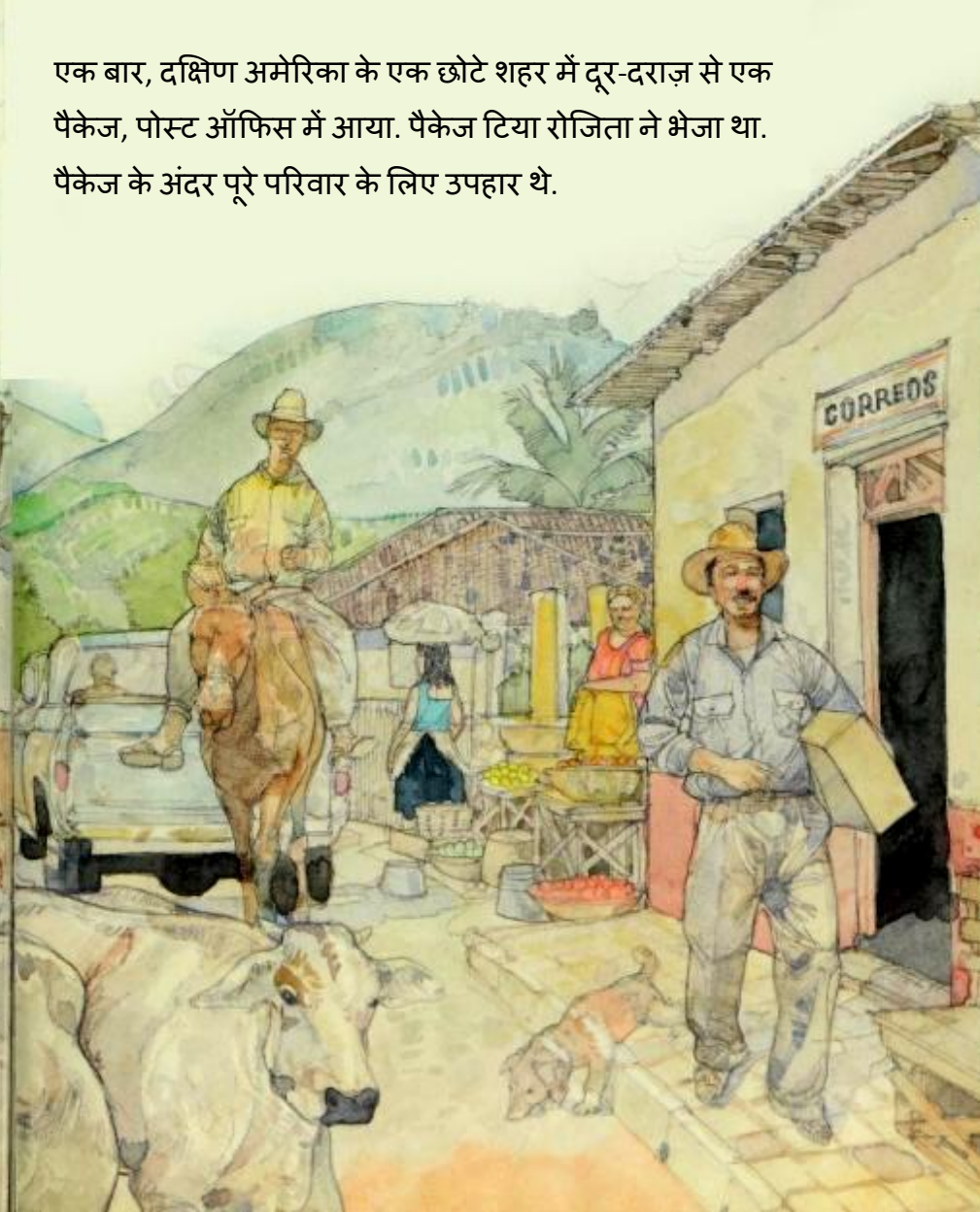
उसमें सिल्विया के लिए एक अद्भुत उपहार था - छोटे लाल रंग के चमकीले जूते, जो धूप में चांदी की तरह चमकते थे.

फिर तुरंत सिल्विया ने अपने पुराने जूते उतारे और खूबसूरत नए जूते पहने. फिर वह चारों ओर घूमने लगी ताकि सब लोग उन्हें देख सकें.

"मीरा, मीरा," उसने कहा. “देखो! देखो!"

"वह जूते डूबते सूरज की तरह लाल हैं," उसकी दादी ने कहा. "लेकिन वे तुम्हारे लिए बड़े हैं."

"तुम्हारे जूते एक तरबूज के गूदे की तरह लाल हैं," पापा ने कहा. “पर वे बहुत बड़े हैं.
अगर तुम उन्हें पहनोगी तो तुम गिर जाओगी."

"टिया रोजिता ने तुम्हारे लिए गुलाब के रंग के जूते भेजे हैं," माँ ने कहा.
"जब तक वे तुम्हें फिट नहीं आते, तब तक तुम उन्हें मत पहनना."
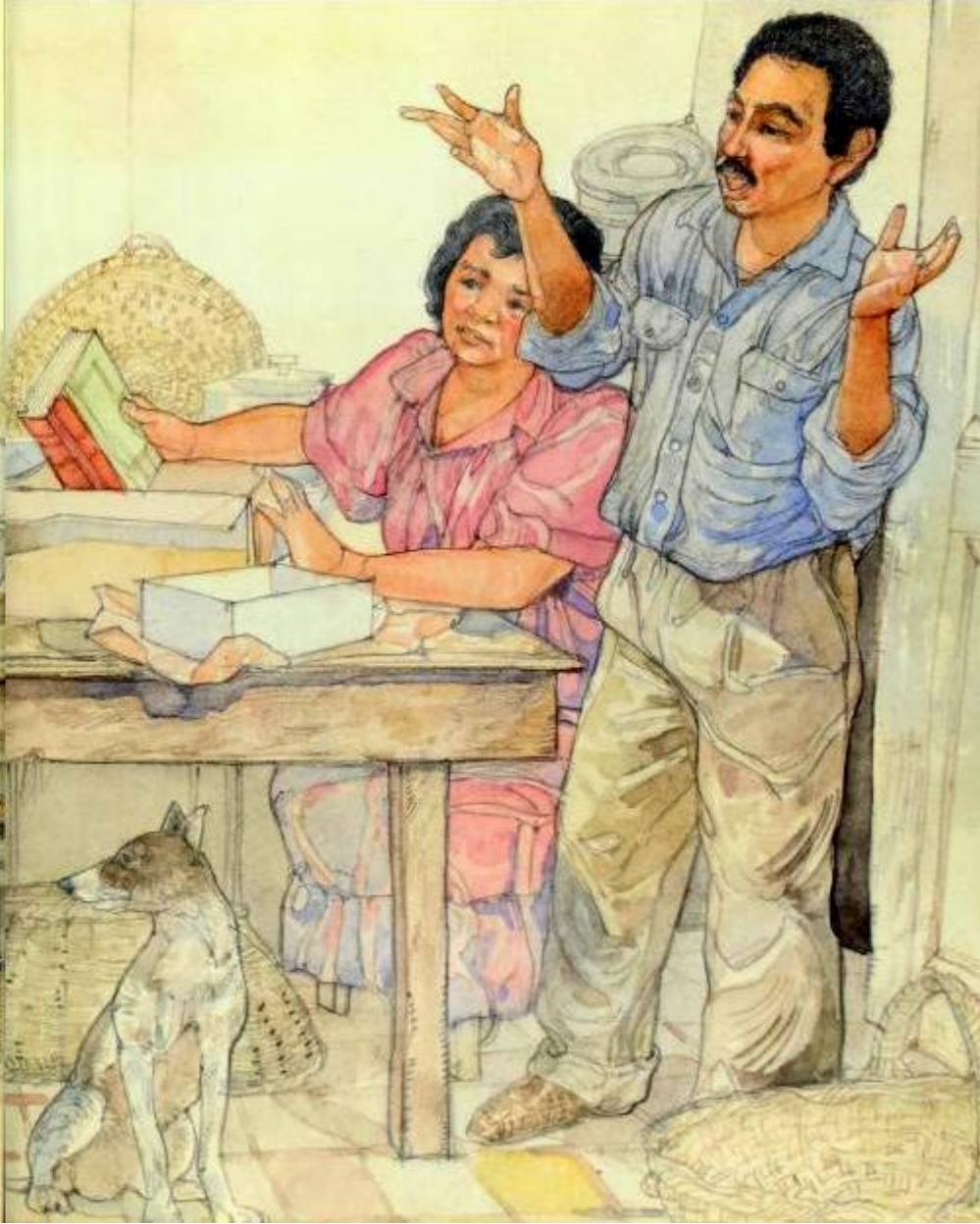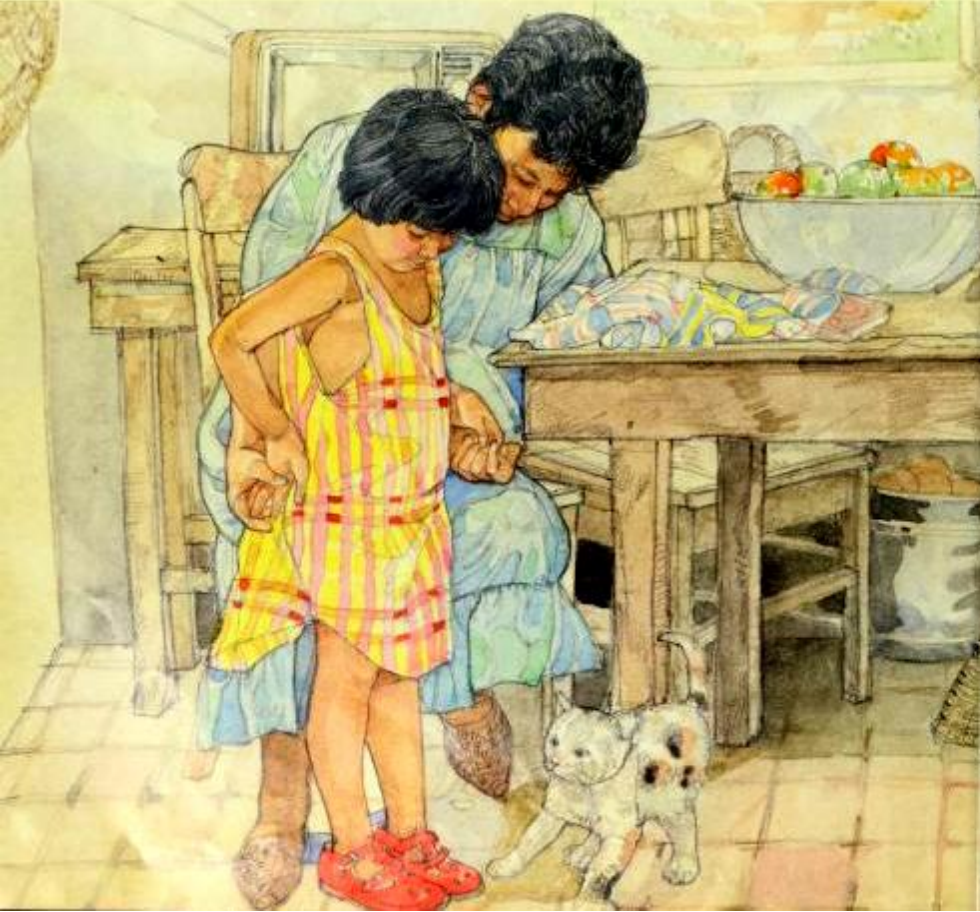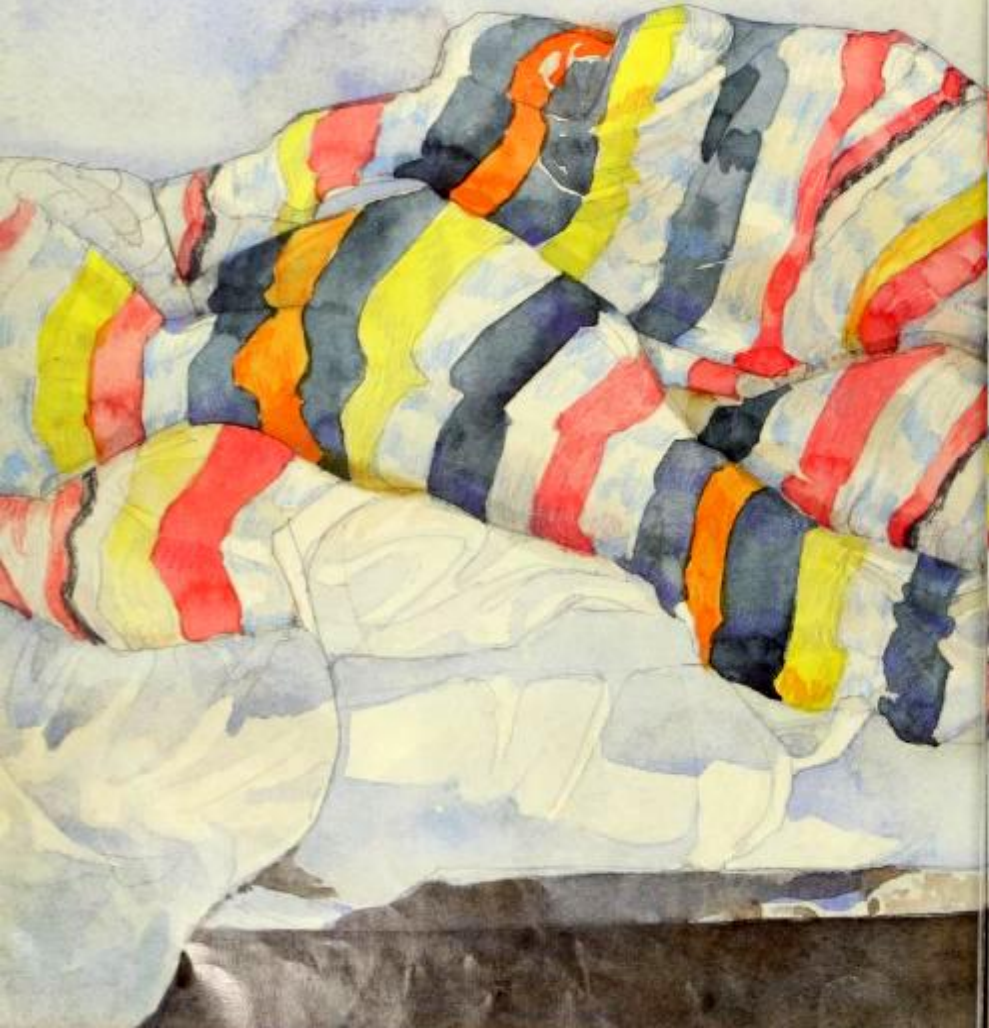
सिल्विया उदास हुई.

यदि वह उन्हें पहन नहीं सकती, तो नए जूते भला किस काम के?

उस रात सिल्विया बिस्तर में अपने नए जूतों के साथ सोई.

अगली सुबह सिल्विया ने फिर से लाल जूते पहने.

शायद वो रात में कुछ बढ़ गई हो.

नहीं, जूते अभी भी बहुत बड़े थे. लेकिन उसने देखा कि उसकी दो गुड़ियों का बिस्तर बनाने के लिए वे बिल्कुल सही थे. वैसे उस समय सुबह थी लेकिन उसके बावजूद, गुड़िए अपने नए लाल बिस्तर में सोने चली गईं.
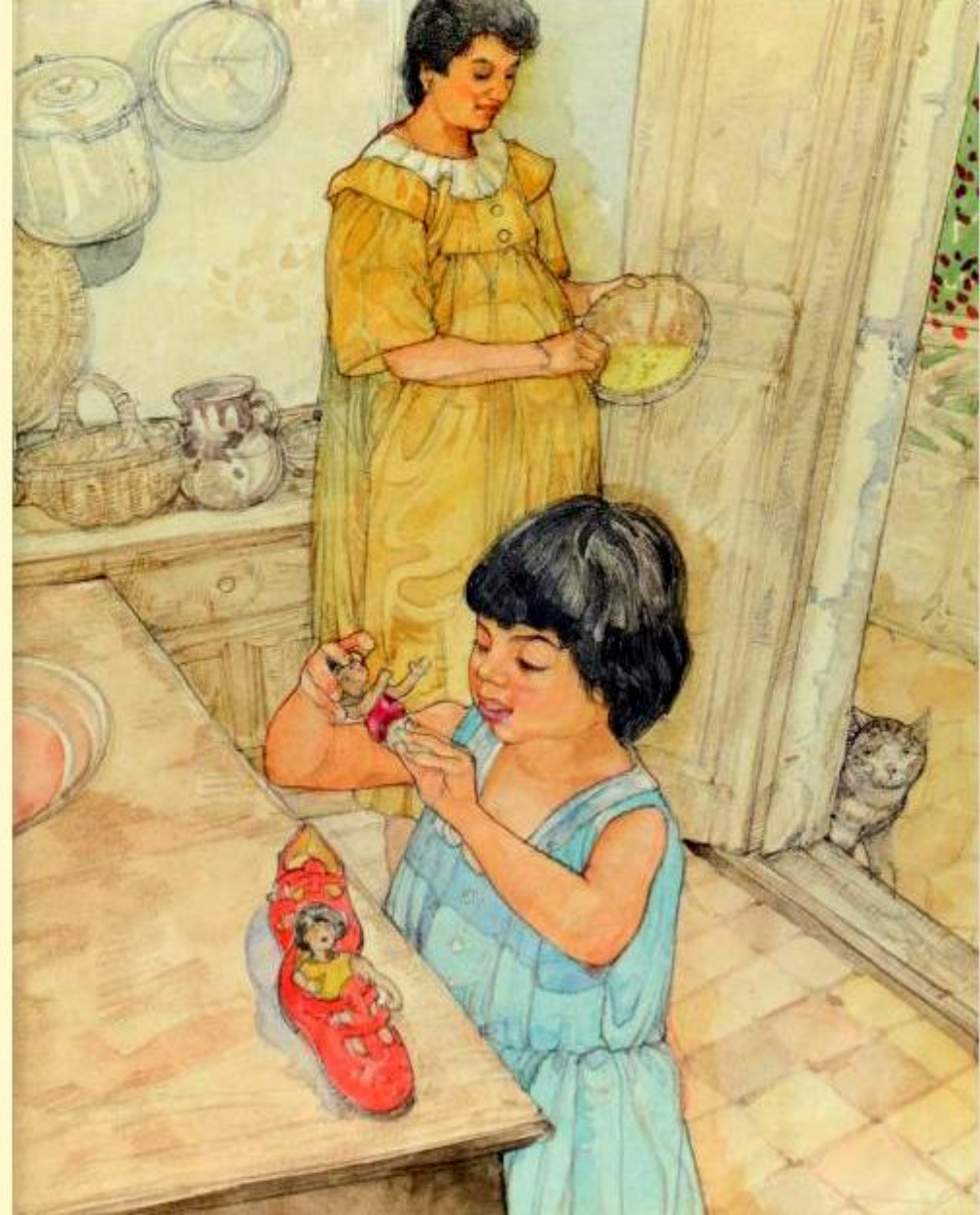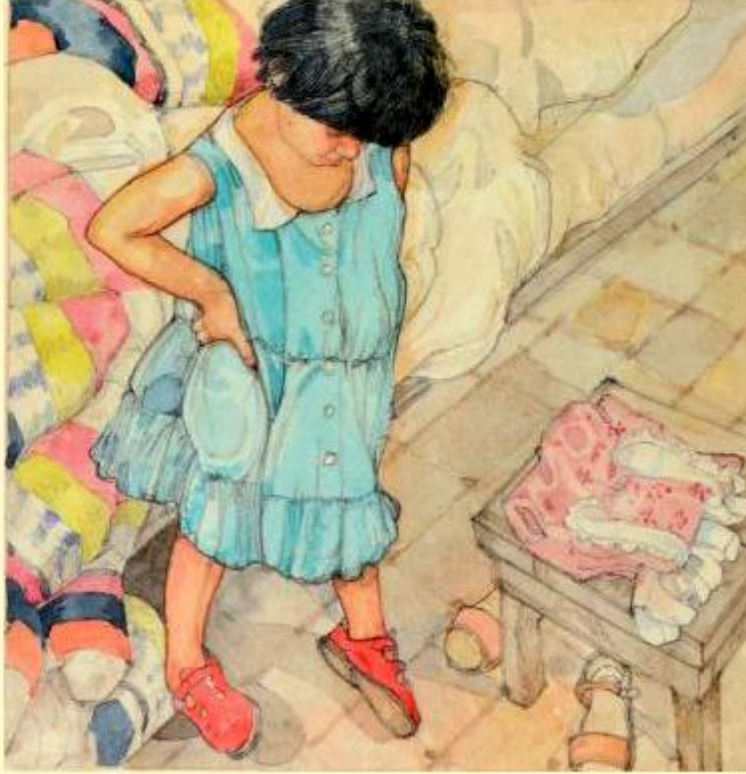
एक सप्ताह बीत गया, और सिल्विया ने लाल जूते फिर से पहनने की कोशिश की. शायद वो उस सप्ताह में कुछ बढ़ी गई हो?

नहीं, जूते अभी भी बहुत बड़े थे. लेकिन उसने देखा कि उन जूतों से दो-कारों की एक बढ़िया ट्रेन बन सकती थी. वो फर्श पर चारों ओर धकेलकर उनसे खेलती रही. गुड़ियों ने लाल ट्रेन में बढ़िया सवारी की!

एक सप्ताह बाद सिल्विया ने फिर से लाल जूते पहनने की कोशिश की. निश्चित रूप से अब तक वह बड़ी हो गई होगी, इसलिए वे उसे ज़रूर फिट आएंगे. नहीं, जूते अभी भी बहुत बड़े थे. लेकिन सिल्विया को एक डोर मिली और उसने उसे जूतों से बांध दिया. फिर उसने खेत में काम करने वाले बैलों की तरह जूतों को खींचा.
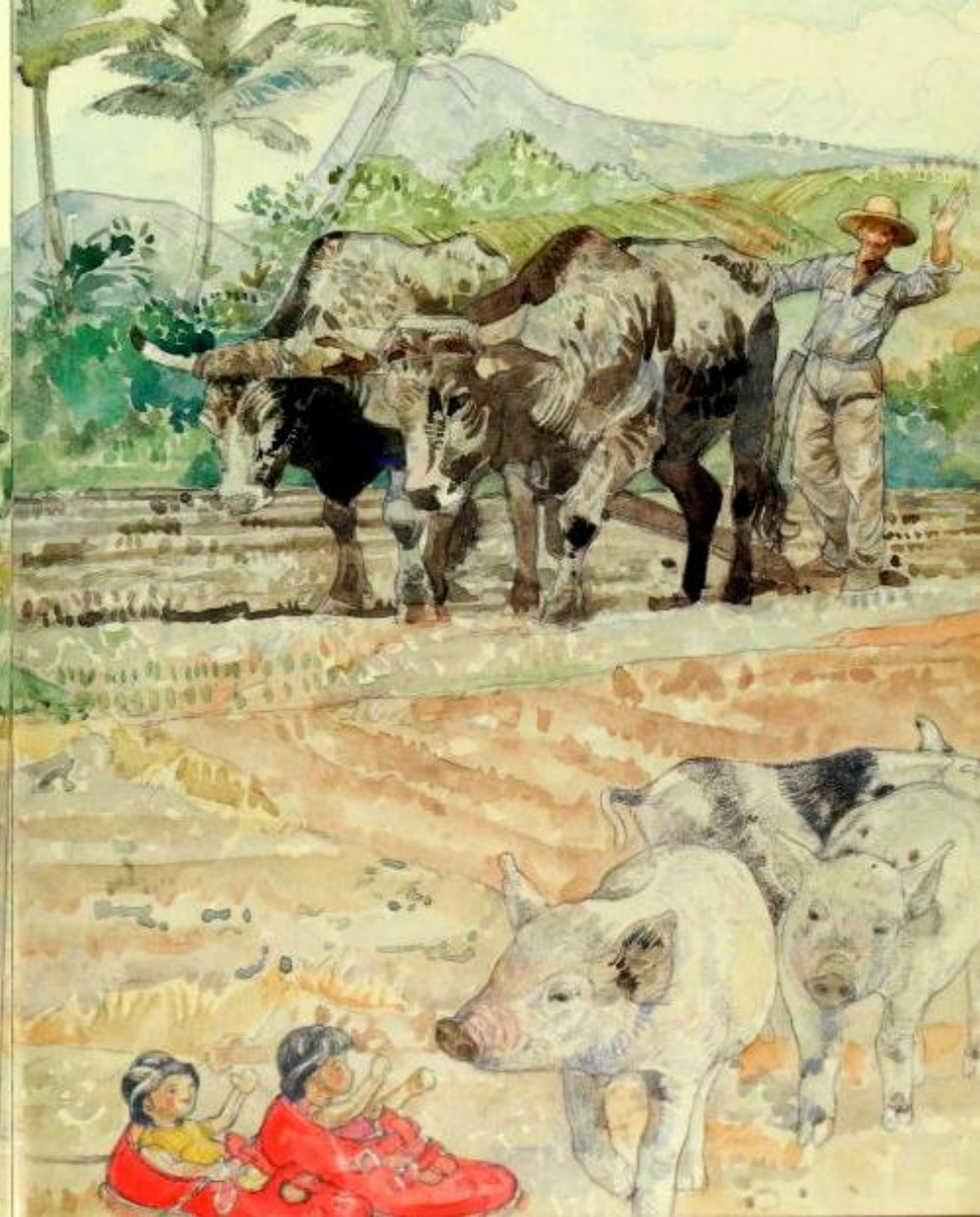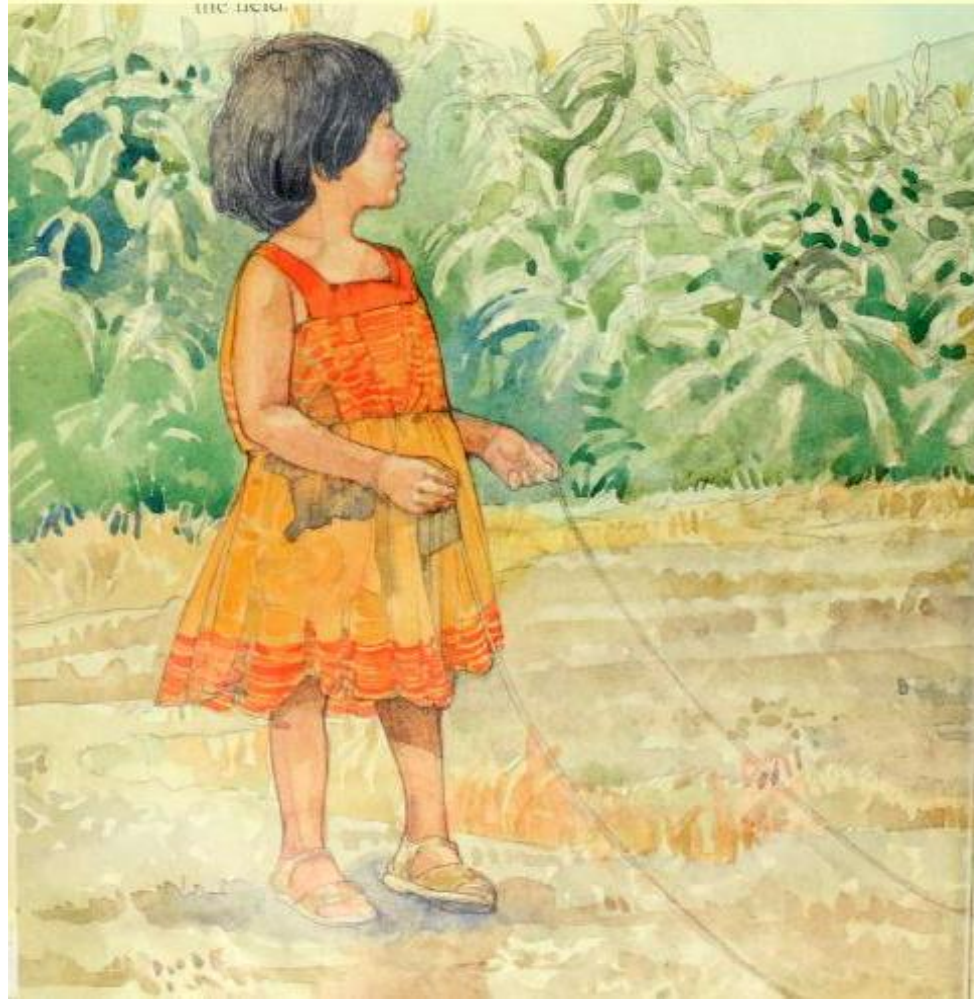
फिर एक और सप्ताह बीता, और सिल्विया ने लाल जूते पहनने की फिर से कोशिश की. क्या अब वे फिट आएंगे?

नहीं, जूते अभी भी बहुत बड़े थे. लेकिन उसने देखा कि वे सुंदर गोल और चिकने कंकड़ और सीप रखने के लिए बिलकुल बढ़िया थे. वो सीप उसने अपने दादा-दादी के साथ समुद्र तट पर इकट्ठे किए थे.
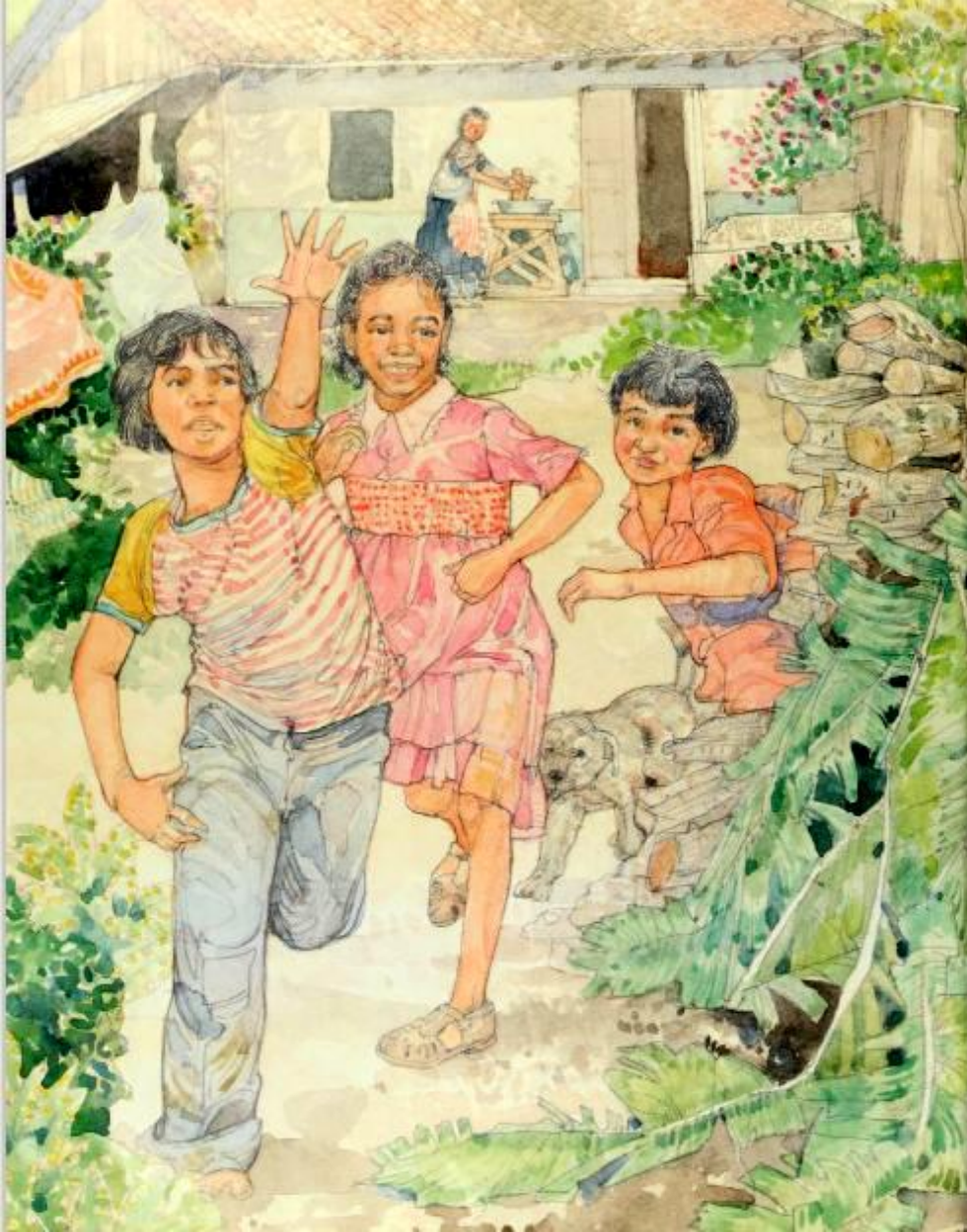
एक सप्ताह और बीता, फिर एक और. सिल्विया दूसरे बच्चों के साथ खेलती रही और माँ की मदद करती रही. मुर्गियों को खिलाने और उनके अंडे तलाशने में वो इतनी व्यस्त थी कि वो अपने नए लाल जूतों को पहनना ही भूल गई.
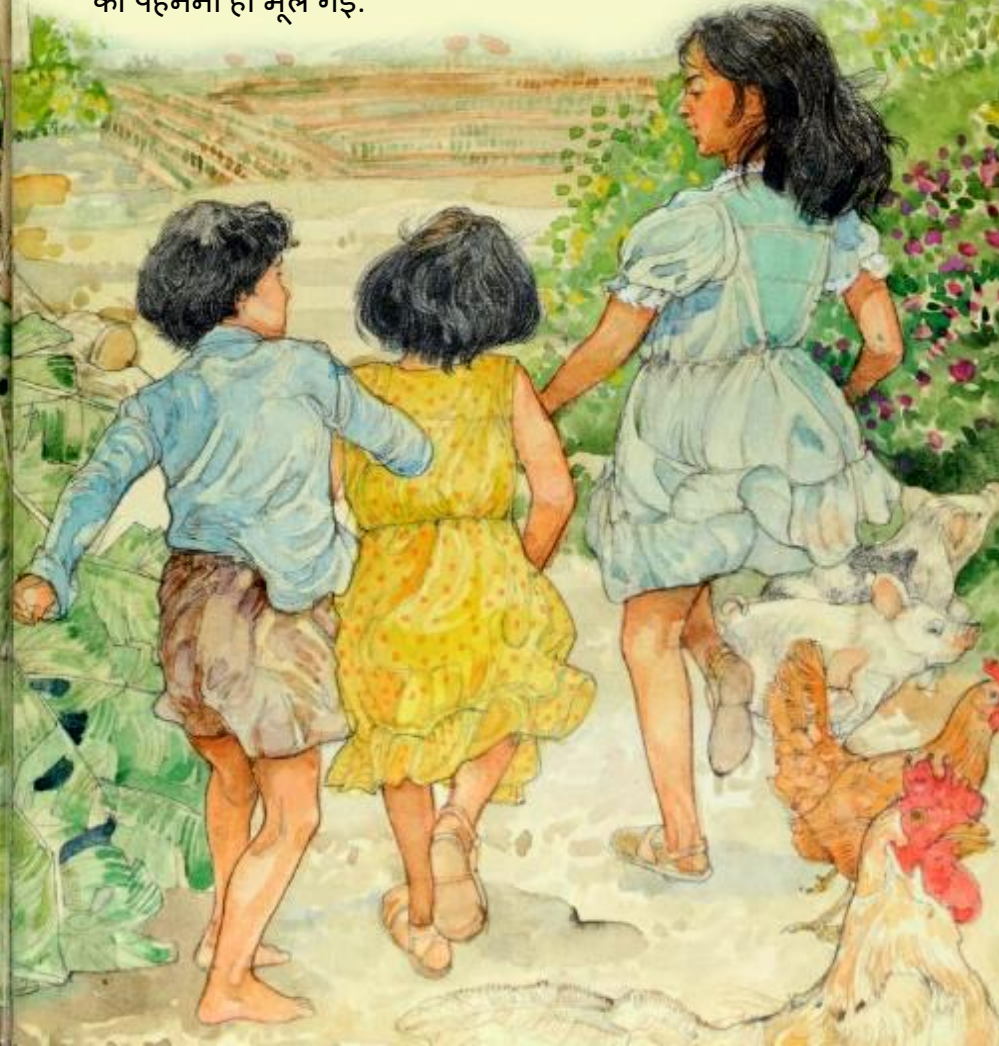
एक दिन माँ ने टिया रोजिता को एक पत्र लिखा. सिल्विया ने लाल जूतों के बारे में सोचा. उसने जूतों में से सारे सीप और कंकड़ खाली करके उन्हें अपनी स्कर्ट में डाल दिया. जूते पहले की तरह ही लाल और खूबसूरत थे. क्या आज वे उसे फिट आएंगे?

"हाँ."

"मीरा, मीरा," वह माँ और बच्चों को अपने जूते दिखाने के लिए दौड़ी.

देखो! देखो! मेरे जूते अब बहुत बड़े नहीं हैं.”
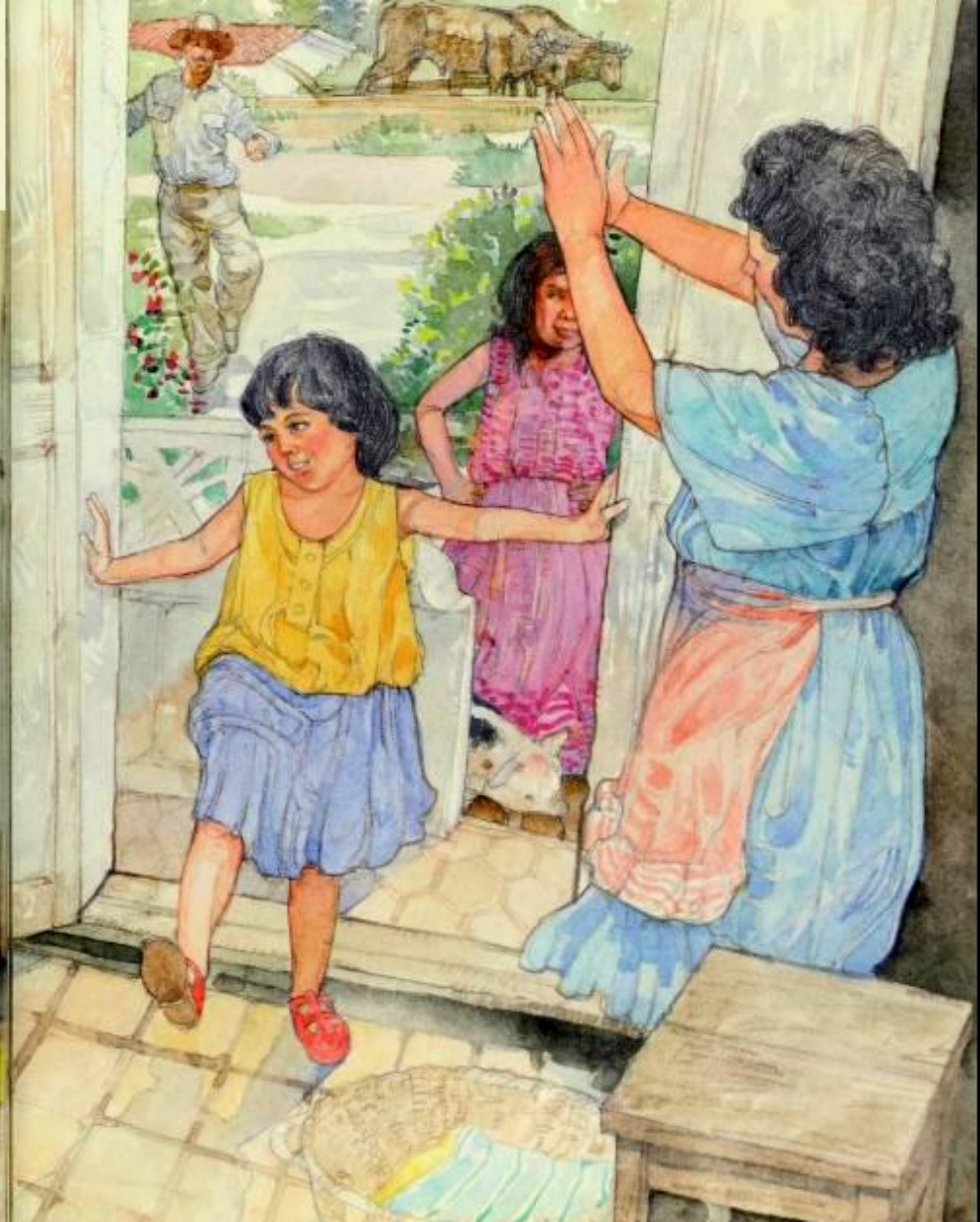
पत्र भेजने के लिए माँ के साथ पोस्ट-ऑफिस जाते समय, सिल्विया ने अपने नए लाल जूते पहने.

"शायद हमारे लिए वहां एक नया पैकेज आया हो?" सिल्विया ने कहा.

"पैकेज हर दिन नहीं आते हैं," माँ ने कहा. "शायद अगली बार टिया रोज़िता मुझे नए नीले जूते भेजेगी," सिल्विया ने कहा.

उन्होंने पत्र पोस्टबॉक्स में डाला और फिर घर चले. सिल्विया के जूते डूबते सूरज जैसे लाल थे. वे तरबूज के गूदे जैसे लाल थे. वे गुलाब की तरह लाल थे.
उनके बकल धूप में चांदी की तरह चमक रहे थे.
और सबसे अच्छी बात यह थी कि अब जूते सिल्विया के लिए सही साइज के थे.

समाप्त